IJPP
Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 14 (1), pp. 001-009, June, 2025
ISSN: 2756-3456
Full Length Research Paper

छात्र-शिक्षकों में सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अनिता मेहता[1], डॉ. बाबु राम मौर्या[2]
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड[1]
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड[2]
Accepted 20TH May, 2025
Author(s) retain the copyright of this article

सार

प्रस्तुत अध्ययन झारखंड के हजारीबाग जिले के बी.एड. छात्र-शिक्षकों में सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय के स्तर का विश्लेषण तथा इन दोनों चरों के मध्य संबंध की जांच करने हेतु किया गया। शिक्षकों का व्यवहार छात्रों के नैतिक विकास को सीधे प्रभावित करता है, अतः उनकी परिपक्वता का मूल्यांकन शैक्षिक गुणवत्ता के लिए महत्वपूर्ण है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य लिंग (पुरुष/महिला) तथा निवास स्थान (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर इन दोनों चरों में अंतर का परीक्षण करना था। शोध हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि अपनाई गई, जिसमें हजारीबाग जिले के बी.एड. महाविद्यालयों से स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा 320 छात्र-शिक्षकों (160 पुरुष, 160 महिला) का चयन किया गया। नलिनी राव की सामाजिक परिपक्वता मापनी तथा नैतिक निर्णय परीक्षण मापनी का उपयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन, टी-परीक्षण तथा कार्ल पियर्सन सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि छात्र-शिक्षकों की सामाजिक परिपक्वता और नैतिक निर्णय के मध्य धनात्मक सार्थक सहसंबंध ($r=0.42$, $p<0.01$) पाया गया। महिला छात्र-शिक्षक पुरुषों की तुलना में दोनों चरों में बेहतर पाई गईं। शहरी छात्र-शिक्षकों ने ग्रामीण से अधिक स्कोर प्राप्त किए। यह अध्ययन शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक कौशल विकास हेतु पाठ्यक्रम सुधार की आवश्यकता पर बल देता है।

मुख्य शब्द: सामाजिक परिपक्वता, नैतिक निर्णय, छात्र-शिक्षक, हजारीबाग, बी.एड.

1. प्रस्तावना

शिक्षक समाज का निर्माता होता है और भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण में उसकी भूमिका सर्वोपरि है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने मूल्य-आधारित शिक्षा एवं शिक्षक की नैतिक क्षमता पर विशेष बल दिया है। एक प्रशिक्षु शिक्षक तभी प्रभावी शिक्षण कर सकता है जब वह स्वयं सामाजिक रूप से परिपक्व हो तथा नैतिक निर्णय लेने में सक्षम हो। सामाजिक परिपक्वता का अर्थ है व्यक्ति की सामाजिक परिस्थितियों में उचित, उत्तरदायी एवं अनुकूल व्यवहार करने की क्षमता। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व का वह आयाम है

Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 14 (1), pp. 001-009, June, 2025
ISSN: 2756-3456

जो उसे सहयोग, सहिष्णुता, उत्तरदायित्व तथा आत्म-निर्भरता प्रदान करता है। दूसरी ओर, नैतिक निर्णय किसी विशेष परिस्थिति में सही और गलत का बोध करते हुए न्यायपूर्ण निर्णय लेने की मानसिक प्रक्रिया है, जिसका विस्तृत विश्लेषण कोहलबर्ग ने अपने नैतिक विकास के सिद्धांत में प्रस्तुत किया। किशोरावस्था और प्रारंभिक वयस्कता में मनोसामाजिक परिपक्वता का विकास निर्णय-क्षमता को गहराई से प्रभावित करता है (लॉरेंस स्टाइनबर्ग एवं कॉफमैन, 1996)।

बी.एड. के छात्र-शिक्षक प्रायः 21 से 30 वर्ष की आयु-वर्ग में होते हैं, यह अवस्था व्यक्तित्व निर्माण की अंतिम संरचनात्मक अवस्था है। इस आयु में सामाजिक परिपक्वता तथा नैतिक निर्णय का स्तर भविष्य के शिक्षक के व्यावसायिक आचरण की दिशा निर्धारित करता है। लैम्ब (1991) के अनुसार नैतिक चेतना के प्रारंभिक संकेत जीवन के दूसरे वर्ष में ही प्रकट हो जाते हैं, जो बी.एड. आयु तक परिष्कृत स्तर तक पहुंच जाते हैं। झारखंड एक जनजातीय-बहुल राज्य है जहां शैक्षिक एवं सामाजिक चुनौतियाँ विशिष्ट प्रकृति की हैं। हजारीबाग जिला झारखंड का प्रमुख शैक्षिक केंद्र है जहां विनोबा भावे विश्वविद्यालय से संबद्ध अनेक बी.एड. महाविद्यालय कार्यरत हैं। यहाँ के छात्र-शिक्षकों की सामाजिक एवं नैतिक प्रोफाइल को समझना क्षेत्रीय शिक्षक-शिक्षा नीति निर्माण हेतु आवश्यक है। पूर्व शोधों से यह ज्ञात होता है कि सामाजिक परिपक्वता तथा नैतिक निर्णय परस्पर संबंधित हैं, परंतु शिक्षक-प्रशिक्षण के संदर्भ में, विशेषकर हजारीबाग जैसे क्षेत्रों में, इस संबंध पर सीमित अनुसंधान हुआ है। लिंग एवं निवास-स्थान जैसे जनसांख्यिकीय कारक भी इन गुणों को प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी ज्ञान-अंतराल को भरने का प्रयास है, जो शिक्षक-प्रशिक्षण की गुणवत्ता संवर्धन हेतु ठोस आधार प्रदान करेगा तथा NEP 2020 के मूल्य-शिक्षा लक्ष्यों को साकार करने में सहायक होगा।

2. साहित्य पुनरीक्षण

सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय पर वैश्विक एवं भारतीय स्तर पर पर्याप्त शोध हुए हैं। लॉरेंस एवं जेसुदास (2011) ने तिरुनेलवेली के 320 उच्चतर माध्यमिक छात्रों पर अध्ययन कर पाया कि सामाजिक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सहसंबंध नहीं था, परंतु ग्रामीण छात्र शहरी छात्रों की तुलना में अधिक सामाजिक रूप से परिपक्व पाए गए। लैम्ब (1991) ने जीवन के दूसरे वर्ष में ही नैतिक चेतना के प्रारंभिक संकेतों की उपस्थिति को प्रदर्शित किया, जो यह सिद्ध करता है कि नैतिक विकास की नींव बाल्यावस्था से ही पड़ती है। लैम्ब एवं फीनी (1995) ने प्रारंभिक नैतिक समझ एवं समाजीकरण के मध्य अंतर्संबंध को रेखांकित किया, यह दर्शाते हुए कि सामाजिक वातावरण नैतिक निर्णय-क्षमता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। लॉरेंस स्टाइनबर्ग एवं कॉफमैन (1996) ने मनोसामाजिक परिपक्वता के तीन आयामों, उत्तरदायित्व, संयम तथा परिप्रेक्ष्य को किशोरों के निर्णय-निर्माण का आधार माना। यह सिद्धांत छात्र-शिक्षकों के व्यवहार-विश्लेषण हेतु महत्वपूर्ण है। लॉर्सन, कॉय एवं कॉलिन्स (1998) के मेटा-विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि किशोरावस्था में अभिभावक-संतान संघर्ष में परिवर्तन सामाजिक परिपक्वता के विकास से जुड़ा हुआ है, जो प्रारंभ से मध्य किशोरावस्था तक घटता है। लार्डेन, मेलिन, होल्स्ट एवं लांग्स्ट्रॉम (2006) ने स्वीडन के बंदी एवं समुदाय-नियंत्रण किशोरों पर अध्ययन कर पाया कि अपरिपक्व नैतिक निर्णय एवं संज्ञानात्मक विकृतियाँ अपराध-प्रवृत्ति से जुड़ी हैं, तथा बालिकाओं ने बालकों की तुलना में अधिक परिपक्व नैतिक निर्णय प्रदर्शित किए। लियोनेल चुडज़िक (2007) ने अपराध में शामिल किशोरों में नैतिक निर्णय एवं आचरण विकार की तीव्रता का अध्ययन कर सामाजिक संदर्भ की भूमिका को रेखांकित किया।

Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 14 (1), pp. 001-009, June, 2025
ISSN: 2756-3456

लिंड (2007) ने नैतिक निर्णय का दोहरा पहलू मॉडल प्रस्तुत किया, जो नैतिक शिक्षा एवं विकास के समकालीन दार्शनिक परिप्रेक्ष्य को आधार प्रदान करता है। लीला, बुएल्गा एवं मुसिटु (2006) ने किशोरावस्था में माता-पिता एवं बच्चों के संबंधों के सामाजिक परिपक्वता पर प्रभाव को विश्लेषित किया। लुईस एवं एमर्सन (2011) के गुणात्मक विश्लेषण ने हाई स्कूल छात्रों के नैतिक निर्णय की प्रक्रिया को गहराई से समझाया। लौरेंको (2003) ने कोहलबर्ग एवं ट्यूरियल के विवाद के माध्यम से बच्चों की नैतिक क्षमता पर महत्वपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया। लैम्बर्ट एवं मिलहम (1968) ने बोर्डिंग-स्कूल वातावरण में किशोरों के सामाजिक-नैतिक विकास की संरचना को उजागर किया। ल्यूक (2009) ने विशेष विद्यालयों में मानसिक रूप से विकलांग बच्चों की सामाजिक परिपक्वता का आकलन प्रस्तुत किया, जो विशेष आवश्यकता वाले समूहों में सामाजिक परिपक्वता के विकास हेतु मार्गदर्शक है। उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट है कि शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में, विशेषतः झारखंड के हजारीबाग जिले में, इन चरों पर शोध की आवश्यकता है।

3. उद्देश्य

1. हजारीबाग जिले के बी.एड. छात्र-शिक्षकों में सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय के स्तर तथा लिंग एवं निवास-स्थान के आधार पर अंतर का अध्ययन करना।
2. छात्र-शिक्षकों में सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय के मध्य सहसंबंध की जाँच करना।

4. परिकल्पनाएँ

H_{01}: लिंग एवं निवास-स्थान के आधार पर छात्र-शिक्षकों की सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{02}: सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

5. अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन झारखंड के हजारीबाग जिले में संपन्न किया गया। हजारीबाग जिले में विनोबा भावे विश्वविद्यालय से संबद्ध 12 से अधिक बी.एड. महाविद्यालय कार्यरत हैं, जिनमें सेंट कोलंबा कॉलेज, स्वामी धर्मबंधु कॉलेज ऑफ एजुकेशन, श्री रामकृष्ण शारदा आश्रम टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, माँ विंध्यवासिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गौतम बुद्ध टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज एवं अन्य प्रमुख हैं। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि अपनाई गई, क्योंकि यह विधि किसी समूह की वर्तमान स्थिति का व्यवस्थित विश्लेषण करने में उपयुक्त है। अध्ययन की लक्षित जनसंख्या हजारीबाग जिले के बी.एड. महाविद्यालयों में अध्ययनरत समस्त छात्र-शिक्षक थे। स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक द्वारा 320 छात्र-शिक्षकों का चयन किया गया, जिनमें 160 पुरुष एवं 160 महिला छात्र-शिक्षक थे; इनमें 160 शहरी एवं 160 ग्रामीण पृष्ठभूमि के थे।

उपकरण

i. **सामाजिक परिपक्वता मापनी** — डॉ. नलिनी राव (1971) द्वारा निर्मित मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया। इसमें 90 कथन तीन आयामों व्यक्तिगत पर्याप्तता, अंतर-व्यक्तिगत पर्याप्तता एवं सामाजिक पर्याप्तता पर आधारित हैं। विश्वसनीयता गुणांक 0.85 है।

ii. **नैतिक निर्णय परीक्षण मापनी** — डी.आर. एवं रश्मि गोयल द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया, जो कोहलबर्ग के सिद्धांत पर आधारित है। विश्वसनीयता गुणांक 0.82 है।

तकनीक एवं प्रक्रिया: अनुसंधानकर्ता ने महाविद्यालय प्राचार्यों से पूर्व-अनुमति लेकर समूह-परीक्षण विधि से उपकरणों का प्रशासन किया। प्रत्येक प्रतिभागी को 60 मिनट का समय दिया गया। नैतिक अनुमति एवं सूचित सहमति प्राप्त की गई।

सांख्यिकीय तकनीक: आंकड़ों के विश्लेषण हेतु SPSS संस्करण 26 का उपयोग करते हुए माध्य, मानक विचलन, टी-परीक्षण तथा कार्ल पियर्सन सहसंबंध गुणांक (r) का प्रयोग किया गया। सार्थकता-स्तर 0.05 तथा 0.01 निर्धारित किया गया।

6. परिणाम एवं विवेचन

तालिका 1: छात्र-शिक्षकों की सामाजिक परिपक्वता का वर्णनात्मक विश्लेषण (N=320)

स्तर	अंक-सीमा	संख्या	प्रतिशत
उच्च	271-360	78	24.4%
औसत	181-270	198	61.9%
निम्न	0-180	44	13.7%
कुल	—	**320**	**100%**

स्रोत: प्राथमिक आंकड़े, हजारीबाग सर्वेक्षण 2024-25

तालिका 1 दर्शाती है कि हजारीबाग जिले के अधिकांश बी.एड. छात्र-शिक्षक (61.9%) सामाजिक परिपक्वता में औसत स्तर पर हैं, जबकि केवल 24.4% उच्च स्तर पर पाए गए। यह संकेत करता है कि सामाजिक परिपक्वता के विकास हेतु शिक्षक-शिक्षा पाठ्यक्रम में विशेष हस्तक्षेप की आवश्यकता है। यह परिणाम लैम्बर्ट एवं मिलहम (1968) के निष्कर्षों से अनुरूप है, जिन्होंने सामाजिक वातावरण की महत्ता को रेखांकित किया था।

तालिका 2: छात्र-शिक्षकों के नैतिक निर्णय का वर्णनात्मक विश्लेषण (N=320)

स्तर	अंक-सीमा	संख्या	प्रतिशत
उच्च	51-75	89	27.8%

Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 14 (1), pp. 001-009, June, 2025
ISSN: 2756-3456

औसत	26-50	187	58.4%
निम्न	0-25	44	13.8%
कुल	—	**320**	**100%**

स्रोत: प्राथमिक आंकड़े, हजारीबाग सर्वेक्षण 2024-25

तालिका 2 के अनुसार 58.4% छात्र-शिक्षक नैतिक निर्णय में औसत स्तर पर हैं, 27.8% उच्च एवं 13.8% निम्न स्तर पर हैं। यह वितरण कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत के परंपरागत चरण से सुसंगत है, जहां अधिकांश वयस्क परंपरागत स्तर पर रहते हैं। लुईस एवं एमर्सन (2011) ने भी समान वितरण-प्रवृत्ति को अपने गुणात्मक अध्ययन में पाया था।

तालिका 3: लिंग के आधार पर सामाजिक परिपक्वता में अंतर

लिंग	**N**	**माध्य**	**मा. वि.**	**t-मान**	**p-मान**
पुरुष	160	218.46	32.14	2.87	0.004**
महिला	160	228.92	33.02		

$**p<0.01$ (सार्थक); स्रोत: प्राथमिक आंकड़े

तालिका 3 दर्शाती है कि महिला छात्र-शिक्षकों का सामाजिक परिपक्वता का माध्य (228.92) पुरुष छात्र-शिक्षकों (218.46) से अधिक है। t-मान 2.87 (p=0.004) 0.01 स्तर पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। महिलाएँ सामाजिक रूप से अधिक परिपक्व पाई गईं, जो लीला, बुएल्गा एवं मुसिटु (2006) के पारिवारिक संबंधों के विश्लेषण से सुसंगत है।

तालिका 4: निवास-स्थान के आधार पर सामाजिक परिपक्वता में अंतर

निवास	**N**	**माध्य**	**मा. वि.**	**t-मान**	**p-मान**
शहरी	160	226.13	31.85	1.98	0.048*
ग्रामीण	160	219.27	33.41		

$*p<0.05$ (सार्थक); स्रोत: प्राथमिक आंकड़े

तालिका 4 से ज्ञात होता है कि शहरी छात्र-शिक्षकों का माध्य (226.13) ग्रामीण (219.27) से अधिक है। t-मान 1.98 (p=0.048) 0.05 स्तर पर सार्थक है। यह परिणाम लॉरेंस एवं जेसुदास (2011) के विपरीत है, जिन्होंने ग्रामीण छात्रों को अधिक परिपक्व पाया था; इसका कारण हजारीबाग की विशिष्ट शहरी-ग्रामीण शैक्षिक संरचना हो सकती है।

तालिका 5: लिंग के आधार पर नैतिक निर्णय में अंतर

लिंग	N	माध्य	मा. वि.	t-मान	p-मान
पुरुष	160	38.24	9.13	3.21	0.001**
महिला	160	41.58	9.42		

***p<0.01 (सार्थक); स्रोत: प्राथमिक आंकड़े*

तालिका 5 स्पष्ट करती है कि महिला छात्र-शिक्षकों का नैतिक निर्णय माध्य (41.58) पुरुषों (38.24) से अधिक है। t-मान 3.21 (p=0.001) 0.01 स्तर पर सार्थक है। यह निष्कर्ष लार्डेन, मेलिन, होल्स्ट एवं लांग्स्ट्रॉम (2006) के अध्ययन से सुसंगत है, जिन्होंने भी बालिकाओं में अधिक परिपक्व नैतिक निर्णय पाया था।

तालिका 6: सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय के मध्य सहसंबंध (N=320)

चर	सहसंबंध (r)	p-मान	सार्थकता
सामाजिक परिपक्वता × नैतिक निर्णय	0.42	<0.001	अति सार्थक**

***p<0.01; स्रोत: प्राथमिक आंकड़े, सांख्यिकीय विश्लेषण*

तालिका 6 दर्शाती है कि सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय के मध्य r=0.42 का मध्यम धनात्मक सहसंबंध है, जो 0.01 स्तर पर अति सार्थक है। अतः जैसे-जैसे सामाजिक परिपक्वता बढ़ती है, नैतिक निर्णय की क्षमता भी बढ़ती है। यह संबंध लैम्ब एवं फीनी (1995) तथा लिंड (2007) के सिद्धांतात्मक ढांचे से पुष्ट है।

तालिका 7: परिकल्पना परीक्षण का सारांश

क्र.	परिकल्पना	परीक्षण	परिणाम	निर्णय
1	H_{01}(a): लिंग × सा.प.	t=2.87	p=0.004	अस्वीकृत
2	H_{01}(b): निवास × सा.प.	t=1.98	p=0.048	अस्वीकृत
3	H_{01}(c): लिंग × नै.नि.	t=3.21	p=0.001	अस्वीकृत
4	H_{02}: सा.प. × नै.नि.	r=0.42	p<0.001	अस्वीकृत

स्रोत: प्राथमिक आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

तालिका 7 परिकल्पना-परीक्षण का समेकित विवरण प्रस्तुत करती है। समस्त चार शून्य परिकल्पनाएँ सार्थकता-स्तर पर अस्वीकृत हुई हैं, जो दर्शाता है कि लिंग, निवास-स्थान एवं चरों के पारस्परिक संबंध में सार्थक भिन्नता विद्यमान है।

Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 14 (1), pp. 001-009, June, 2025
ISSN: 2756-3456

7. विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम अनुसंधान के उद्देश्यों के अनुरूप विश्लेषित किए गए हैं। प्रथम उद्देश्य के अंतर्गत हजारीबाग जिले के बी.एड. छात्र-शिक्षकों की सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय का स्तर मूल्यांकित किया गया, जो अधिकांशतः औसत स्तर का पाया गया। यह स्थिति इस तथ्य की ओर इंगित करती है कि वर्तमान बी.एड. पाठ्यक्रम सामाजिक एवं नैतिक विकास के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान नहीं कर रहा है। लैम्बर्ट एवं मिलहम (1968) ने भी विद्यालयी वातावरण की महत्ता को रेखांकित किया था, जो इस निष्कर्ष को समर्थन प्रदान करता है। लिंग-आधारित विश्लेषण में महिला छात्र-शिक्षक पुरुषों की तुलना में सामाजिक परिपक्वता (माध्य 228.92 बनाम 218.46) तथा नैतिक निर्णय (41.58 बनाम 38.24) दोनों में बेहतर पाई गईं। यह निष्कर्ष लार्डेन, मेलिन, होल्स्ट एवं लांग्स्ट्रॉम (2006) के स्वीडिश अध्ययन से अनुरूप है, जिन्होंने पाया था कि बालिकाओं ने अधिक परिपक्व नैतिक निर्णय एवं कम संज्ञानात्मक विकृतियाँ प्रदर्शित कीं। लीला, बुएल्गा एवं मुसिटु (2006) के अनुसार पारिवारिक सामाजीकरण-प्रक्रिया लड़कियों में सहयोग एवं उत्तरदायित्व के मूल्यों को अधिक प्रबलता से स्थापित करती है। भारतीय सामाजिक परिप्रेक्ष्य में लड़कियों को सामान्यतः परिवार-केंद्रित दायित्व, सहयोग एवं अनुशासन के संस्कार बाल्यकाल से दिए जाते हैं, जो उनकी सामाजिक-नैतिक परिपक्वता को सशक्त करते हैं।

निवास-स्थान के संदर्भ में शहरी छात्र-शिक्षकों ने ग्रामीण की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया। यह निष्कर्ष लॉरेंस एवं जेसुदास (2011) के तमिलनाडु अध्ययन से भिन्न है, जहाँ ग्रामीण छात्र अधिक सामाजिक परिपक्व पाए गए थे। हजारीबाग के संदर्भ में शहरी छात्र-शिक्षकों को बेहतर शैक्षिक सुविधाएँ, सूचना-संसाधन, सोशल मीडिया एक्सपोजर तथा विविध सामाजिक अनुभव प्राप्त होते हैं, जो उनकी परिपक्वता को बढ़ावा देते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित संसाधन, पारंपरिक मूल्य-व्यवस्था एवं कम सामाजिक गतिशीलता इस अंतर का कारण हो सकती है। द्वितीय उद्देश्य की प्राप्ति के अंतर्गत सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय के मध्य r=0.42 का धनात्मक एवं अति सार्थक सहसंबंध प्राप्त हुआ। यह कोहलबर्ग के सिद्धांत की पुष्टि करता है कि नैतिक निर्णय का विकास सामाजिक अंतःक्रिया एवं परिप्रेक्ष्य-ग्रहण क्षमता पर निर्भर है। लॉरेंस स्टाइनबर्ग एवं कॉफमैन (1996) ने भी उत्तरदायित्व, संयम एवं परिप्रेक्ष्य को नैतिक निर्णय का आधार माना था, जो सामाजिक परिपक्वता के मुख्य घटक हैं। लॉर्सन, कॉय एवं कॉलिन्स (1998) ने पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन को सामाजिक-नैतिक विकास से जोड़ा था। लिंड (2007) के दोहरा-पहलू मॉडल के अनुसार नैतिक निर्णय के दो आयाम, संज्ञानात्मक एवं भावात्मक, सामाजिक परिपक्वता से गहराई से जुड़े हैं। लैम्ब (1991) तथा लैम्ब एवं फीनी (1995) का तर्क कि नैतिक चेतना जीवन के दूसरे वर्ष में ही उभर आती है और सामाजीकरण द्वारा परिष्कृत होती है, यह संकेत देता है कि बी.एड. आयु तक यह क्षमता परिष्कृत स्तर पर होनी चाहिए। यदि छात्र-शिक्षकों में यह अपेक्षित स्तर पर नहीं है, तो विद्यालयों एवं समाज को आत्म-निरीक्षण की आवश्यकता है। लौरेंको (2003) ने कोहलबर्ग के सिद्धांत की समीक्षा करते हुए बच्चों की नैतिक क्षमता के विकास में सामाजिक संदर्भ की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित किया, जो प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों को सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है। लियोनेल चुडज़िक (2007) ने भी सामाजिक-नैतिक विकास के विचलन से उत्पन्न समस्याओं को दर्शाया था। व्यावहारिक दृष्टि से इन परिणामों का बी.एड. पाठ्यक्रम पर प्रभाव गहरा है। शिक्षक-शिक्षा संस्थानों को मूल्य-शिक्षा, नैतिक दुविधा-चर्चा, सेवा-शिक्षण तथा सहयोगात्मक गतिविधियों को अनिवार्य रूप से सम्मिलित करना चाहिए। ल्यूक (2009) के अनुसार विशेष परिप्रेक्ष्य में सामाजिक परिपक्वता का आकलन भी आवश्यक है, जो विविधतापूर्ण कक्षा-स्थितियों के लिए शिक्षकों को तैयार करता है। हजारीबाग के बी.एड.

महाविद्यालयों को विशेष रूप से जनजातीय क्षेत्रों के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम-संवर्धन करना चाहिए।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है कि हजारीबाग जिले के बी.एड. छात्र-शिक्षकों की सामाजिक परिपक्वता एवं नैतिक निर्णय औसत स्तर पर है। लिंग एवं निवास-स्थान का इन चरों पर सार्थक प्रभाव पाया गया; महिला एवं शहरी छात्र-शिक्षक बेहतर प्रदर्शन करते हैं। दोनों चरों के मध्य धनात्मक सार्थक सहसंबंध सिद्ध करता है कि सामाजिक रूप से परिपक्व छात्र-शिक्षक अधिक न्यायपूर्ण नैतिक निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में नैतिक दुविधा-आधारित अध्यापन, सामुदायिक सहभागिता एवं चरित्र-निर्माण गतिविधियों को सम्मिलित करना आवश्यक है, जिससे NEP 2020 के मूल्य-शिक्षा लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित हो सके।

संदर्भ सूची

1. लैम्ब, एस. (1991)। प्रथम नैतिक बोध: जीवन के दूसरे वर्ष में आरंभिक नैतिकता के पहलू और योगदान। डब्ल्यू. एम. कर्टिन्स और जे. एल. गेविट्र्ज़ (एड्स) में, *नैतिक व्यवहार और विकास की पुस्तिका, वॉल्यूम 1: सिद्धांत; वॉल्यूम 2: अनुसंधान; वॉल्यूम 3: आवेदन* (पृ. 171-189)। हिल्सडेल, एनजे: एर्लबौम। https://doi.org/10.4324/9781315807287
2. लैम्ब, एस., और फ़ीनी, एन.सी. (1995)। प्रारंभिक नैतिक समझ और समाजीकरण। डब्ल्यू.एम. कर्टिन्स और जे.एल. गेविट्र्ज़ (सं.) में, *नैतिक विकास: एक परिचय* (पृ. 497-510)। बोस्टन: एलिन और बेकन।
3. लैम्बर्ट आर., और मिलहम एस. (1968)। *द होथहाउस सोसाइटी—लड़कों और लड़कियों के स्वयं के लेखन के माध्यम से बोर्डिंग-स्कूल जीवन की खोज*। लंदन: वीडेनफेल्ड और निकोलसन।
4. लार्डेन, एम., मेलिन, एल., होल्स्ट, यू., और लांग्स्ट्रॉम, एन. (2006)। जेल में बंद अपराधी और सामुदायिक नियंत्रण किशोरों में नैतिक निर्णय, संज्ञानात्मक विकृतियां और सहानुभूति। *अपराध और कानून*, खंड 12, अंक 5, पृ. 453-462। https://doi.org/10.1080/10683160500036855
5. लॉरेंस स्टाइनबर्ग, और एलिजाबेथ कॉफ़मैन। (1996)। किशोरावस्था में निर्णय की परिपक्वता: किशोरों के निर्णय लेने में मनोसामाजिक कारक। *कानून और मानव व्यवहार*, खंड 20, क्रमांक 3, पृ. 249-272। https://doi.org/10.1007/BF01499023
6. लॉर्सन, बी., कॉय, के.सी., और कॉलिन्स, डब्ल्यू.ए. (1998)। किशोरावस्था में माता-पिता-बच्चे के संघर्ष में बदलाव पर पुनर्विचार: एक मेटा-विश्लेषण। *बाल विकास*, 69(3), 817-832। https://doi.org/10.1111/j.1467-8624.1998.tb06245.x
7. लॉरेंस, ए.एस., और जेसुदास, आर. (2011)। उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन*, खंड 3, संख्या 3, पृ. 243-250। रिसर्च इंडिया पब्लिकेशन। https://eric.ed.gov/?id=ED582393

Global Journal of Sociology and Anthropology
Vol. 14 (1), pp. 001-009, June, 2025
ISSN: 2756-3456

8. लीला, एम., बुएल्गा, एस., और मुसिटु, जी. (2006)। *लास रिलेसिओन्स एंट्रे पैड्रेस ई हिजोस एन ला एडोलसेनिया* (किशोरावस्था में माता-पिता और बच्चों के बीच संबंध)। मैड्रिड: पीरामिड।
9. लिंड, जी. (2007)। नैतिक निर्णय का अर्थ और माप पुनरीक्षित—एक दोहरा पहलू मॉडल। फास्कोडी एड (सं.), *नैतिक विकास और शिक्षा पर समकालीन दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में* क्रेस्किल, एनजे: हैम्पटन प्रेस।
10. लियोनेल चुडज़िक। (2007)। अपराध में शामिल किशोरों में नैतिक निर्णय और आचरण विकार की तीव्रता: स्कूल ग्रेड द्वारा मिलान नियंत्रण। *मनोवैज्ञानिक रिपोर्ट*, खंड 101, पृ. 221-236।
11. लुईस, पी.टी., और एमर्सन, आई.ए. (2011)। हाई स्कूल के छात्रों के नैतिक निर्णय पर एक गुणात्मक विश्लेषण। *हमेर: शिक्षा विज्ञान और मनोविज्ञान*, 2011, संख्या 2 (19), ISSN 1512-1801, पृ. 32।
12. लौरेंको, ओ. (2003)। कोहलबर्ग के साथ ट्यूरियल के विवाद को समझना: बच्चे की नैतिक क्षमता का मामला (समीक्षा)। *मनोविज्ञान में नए विचार*, खंड 21, अंक 1, पृ. 43-68।
13. ल्यूक, एस. (2009)। चयनित विशेष विद्यालयों में मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के बीच सामाजिक परिपक्वता का आकलन। *सारांश*, राजीव गांधी स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, बैंगलोर, कर्नाटक।